

अजमेर दरगाह में शवि मंदरि

चर्चा में क्यों?

हाल ही में अजमेर की एक स्थानीय अदालत ने सुफी संत मोइनुद्दीन चशिती की दरगाह के भीतर शवि मंदरि की मौजूदगी का दावा करने वाले एक दीवानी मुकदमे के संबंध में तीन पक्षों को नोटसि जारी करने का आदेश दिया।

मुख्य बादु

- सितंबर 2024 में दायर इस मुकदमे में दरगाह के भीतर एक शवि मंदरि के अस्तित्व का दावा किया गया है और मंदरि में पूजा फरि से शुरू करने के निर्देश देने की मांग की गई है।
- अजमेर दरगाह समति, अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय और नई दलिली स्थिति भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) को नोटसि जारी कर उनसे जवाब मांगा गया है।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चशिती:
 - मोइनुद्दीन हसन चशिती का जन्म 1141-42 ई. में ईरान के सजिस्तान (आधुनिक ससितान) में हुआ था।
 - मुझुद्दीन मुहम्मद बनि साम गौर ने तराइन के दूसरे युद्ध (1192) में पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर दिया था और दलिली में अपना शासन स्थापित कर लिया था, उसके बाद ख्वाजा मोइनुद्दीन चशिती ने अजमेर में रहना और उपदेश देना शुरू कर दिया था।
 - आध्यात्मिक अंतरदृष्टि से परमित्रण उनके शक्तिशापरद प्रवचनों ने जलद ही स्थानीय जनता के साथ-साथ दूर-दूर से राजाओं, कुलीनों, कसिनों और गरीबों को भी अपनी ओर आकर्षित किया।
 - अजमेर स्थिति उनकी दरगाह पर मुहम्मद बनि तुगलक, शेरशाह सूरी, अकबर, जहांगीर, शाहजहाँ, दारा शकिह और औरंगजेब जैसे शासकों ने जायिरत की।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)

- संस्कृत मंत्रालय के अधीन ASI, देश की सांस्कृतिक वरिसत के पुरातात्वकि अनुसंधान और संरक्षण के लिये प्रमुख संगठन है।
- प्राचीन समारक तथा पुरातत्व स्थल और अवशेष (AMASR) अधनियम, 1958 ASI के कामकाज को नियंत्रिति करता है।
- यह राष्ट्रीय महत्वपूर्ण स्थलों के 3650 से अधिक प्राचीन समारकों, पुरातात्वकि स्थलों और अवशेषों का प्रबंधन करता है।
- इसकी गतिविधियों में पुरातात्वकि अवशेषों का सर्वेक्षण, पुरातात्वकि स्थलों की खोज और उत्खनन, संरक्षित समारकों का संरक्षण और रखरखाव आदि शामिल हैं।
- इसकी स्थापना 1861 में ASI के पहले महानदिशक अलेक्झेंडर कन्डिम ने की थी। अलेक्झेंडर कन्डिम को “भारतीय पुरातत्व के जनक” के रूप में भी जाना जाता है।